खीर की गुड़िया

अवनीन्द्रनाथ ठाकु

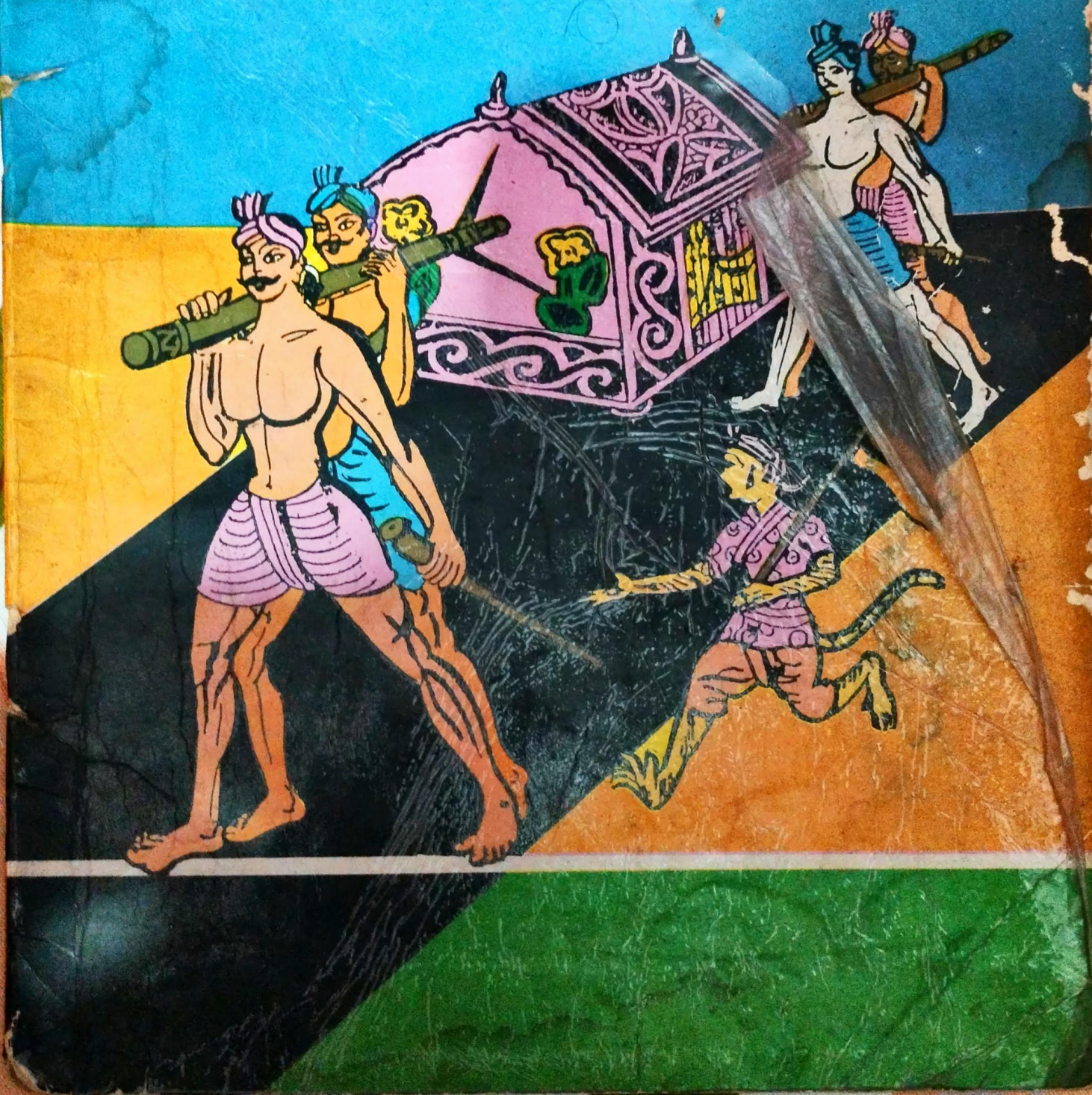

Prince

खीर की गुड़िया

लेखक
अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवाद
माया गुप्त

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : सितम्बर 1957
द्वितीय संस्करण : मार्च 1959
तृतीय संस्करण : आषाढ़ 1916 (जून 1994)

© प्रकाशन विभाग

ISBN 81-230-0145-2

मूल्य: 16.00 रुपये

निदेशक प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार
पटियाला हाउस नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाउस करीमभाई रोड बालार्ड पायर बम्बई-400038
- 8 एस्प्लेनेड ईस्ट कलकत्ता-700069
- एल०एल०ए० आडीटोरियम 736 अन्नासलै मद्रास-600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग अशोक राजपथ पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस प्रेस रोड त्रिवेंद्रम-695001
- 10 बी० स्टेशन रोड लखनऊ-226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग पब्लिक गार्डन्स हैदराबाद-500001

पूजा आर्ट प्रिंटर्स नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

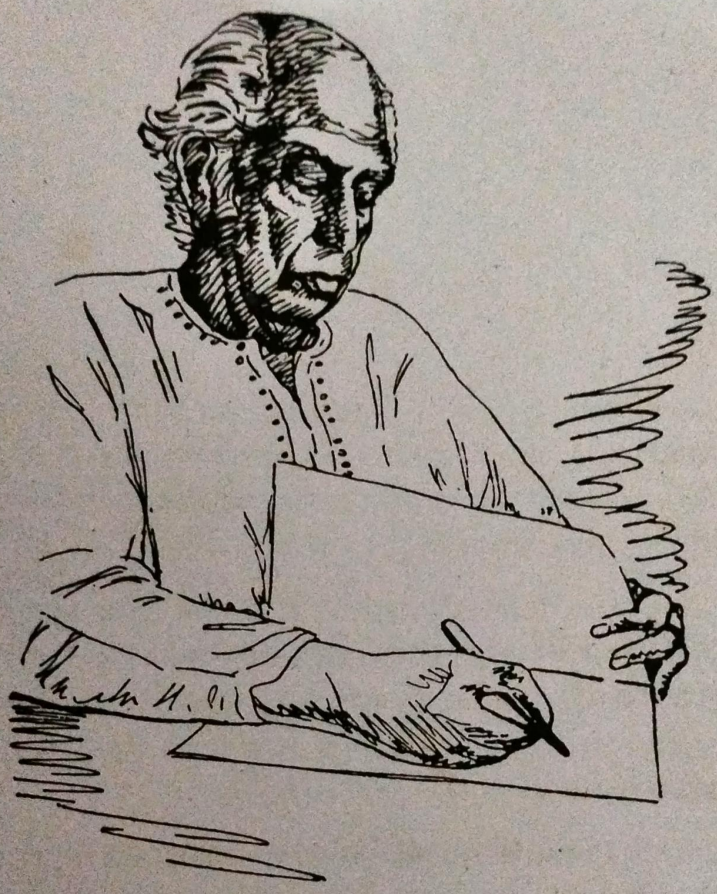

श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

भूमिका

अपने चाचा रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ही तरह अवनीन्द्रनाथ ठाकुर भी एक प्रसिद्ध लेखक और चित्रकार थे। रंग की कूची की तरह उनकी कलम भी खूब चली और उभरी है। उनकी कल्पना प्रधान सरल शैली और सुबोध भाषा ने उनकी रचनाओं को लोकप्रिय बना दिया। उनसे न केवल बंगला साहित्य अपितु विश्व साहित्य भी धनी हुआ है।

अवनीन्द्रजी ने अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखी हैं परन्तु उनका बाल साहित्य एक विशेष आकर्षण लिए हुए है। उसमें कल्पना है, सजीवता है, और शस्य श्यामला बंगभूमि के लोकजीवन की छाप उभर कर आई है। मानव के दुख-सुख, प्रीति, श्रृंगार, वीर और वैर भाव इन सबने खाद बन कर मानो लोककथाओं को पुष्ट किया है। रहन-सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा-उपासना, इन सबसे कहानी का ठाठ बनता और बदलता रहता है।

लोक जीवन और लोक साहित्य की परम्परा एक-सी है। अवनीन्द्रजी जैसे सफल कथा-लेखकों की ही कृति पर मुग्ध होकर पं० जवाहरलालजी ने कहा था—"मुझे कई बार इस बात पर आश्चर्य होता है कि ये व्यक्ति जिन्होंने ऐसे सजीव सपनों और कल्पनाओं के सहारे अद्भुत दिलचस्प कथानक संजोए हैं कैसे रहे होंगे और उन्होंने विचार और कल्पनाओं की किस सोने की खान में से खोद कर ऐसी चीज़ों को निकाला और उनके रूप को संवारा होगा"।

अवनीन्द्रजी की 'खीर की गुड़िया' एक इसी प्रकार की संवारी हुई गुड़िया-सी सुन्दर और मनमोहक रचना है। ऐसी कथाएं ही सदियों से बच्चों और बूढ़ों का समान रूप से मनोरंजन करती आई हैं। आशा है कि इसका हिन्दी रूप भी पाठकों की कहानी सुनने-पढ़ने की रुचि को परिष्कृत और सन्तुष्ट करने में सफल होगा।

खीर की गुड़िया

एक राजा के छोटी और बड़ी दो रानियां थीं। छोटी रानी राजा की सुहागिन थी। राजमहल में छोटी रानी का बहुत आदर और आवभगत थी। छोटी रानी सतमहले मकान में रहती थी। सात सौ दासियां उसकी सेवा में लगी रहती थीं। वे रानी के पांव धोती थीं, आलता लगाती थीं, केश झाड़ती-संवारती थीं। छोटी रानी सात वाटिकाओं के सात टोकरी फूलों से माला गूंथती थी और सात सन्दूकों में भरे सात राजाओं के हीरे-जवाहरात के गहने पहनती थी। छोटी रानी राजा को प्राण से भी अधिक प्यारी थी।

और बड़ी रानी? बड़ी रानी राजा को फूटी आंखों भी नहीं भाती थी। उसका कुछ भी जोर नहीं चलता था। बेचारी बड़ी दुखिया थी। बड़ी रानी को एक छोटी-सी टूटी-फूटी कुटिया, एक दासी जो-बहरी और गूंगी थी, पहनने के लिए फटे चिथड़े और सोने के लिए एक फटी कथरी मिली हुई थी। बड़ी के पास राजा एक दिन आते, एक बार बैठते और एक बात करके ही चल देते।

छोटी रानी के महल में राजा बारहों महीने रहते थे।

एक दिन राजा ने मन्त्री को बुला भेजा और कहा--"मन्त्री मैं परदेश घूमने जाऊंगा। तुम जहाज सजाओ।"

राजा की आज्ञा से राजमन्त्री जहाज सजाने गए। सात जहाज सजने में सात महीने लग गए। छः जहाजों में राजा के नौकर-चाकर चलेंगे और सोने के शामियाने से ढके सोने के जहाज में राजा खुद चलेंगे।

मन्त्री ने आकर खबर दी--"महाराज, जहाज तैयार हैं।"

राजा ने जवाब दिया--"कल चलेंगे।"

मन्त्री अपने घर लौटे।

छोटी रानी अन्दर महल में सोने के पलंग पर लेटी हुई थी। सात सौ सखियां सेवा कर रही थीं। राजा वहां पहुंचे। उन्होंने सोने के पलंग के सिरहाने बैठकर छोटी रानी से पूछा--"रानी, परदेश घूमने जा रहा हूं। तुम्हारे लिए क्या लाऊं?"

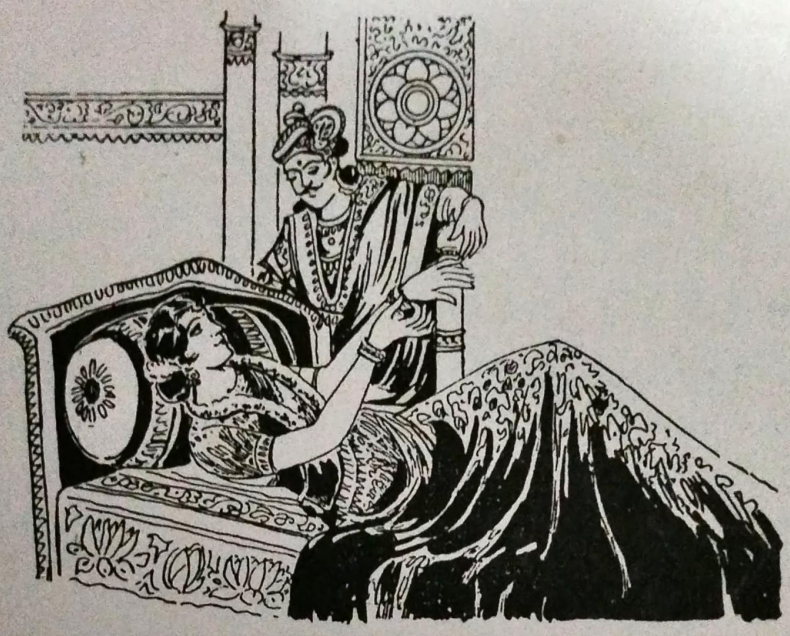

रानी अपनी माखन-सी कोमल कलाइयों की हीरे की चूड़ियों को घुमाकर बोली--"हीरे का रंग बड़ा फीका होता है, इसलिए हाथ खाली-खाली दिखता है। खून के जैसे सुर्ख किसी रत्न की आठ चूड़ियां पाऊं तो पहनूं।"

राजा बोले--"अच्छी बात है। रत्न-देश से तुम्हारे लिए रत्न की चूड़ियां लाऊंगा।"

रानी गोरे-गोरे पांवों को हिला-हिला कर घुंघरू बजा-बजा कर बोली—"ये घुंघरू ठीक नहीं बजते। आग के रंग के ठोस सोने के दस-दस पायल मिलें, तो पहनूं।"

राजा ने जवाब दिया--"स्वर्ण देश से तुम्हारे लिए सोने के पायल लाऊंगा।"

रानी गले में पड़ा हुआ गजमुक्ता हार दिखाकर बोली--"राजा, ये मोती बहुत छोटे हैं। मैंने सुना है, किसी देश में कबूतर के अण्डे के समान बड़े-बड़े मोती मिलते हैं। उन्हीं मोतियों का एक हार मेरे लिए लेते आना।"

राजा ने कहा--"समुद्र के बीचोंबीच मोतियों का राज्य है, उसी मुक्ता देश से तुम्हारे लिए हार लाऊंगा। और क्या चाहिए, रानी?"

तब लाडली छोटी रानी अपनी सोने की तरह दमकती हुई देह पर सुनहला आंचल खींच कर बोली--"बाप रे, यह साड़ी भी कैसी बोझल है! आसमान जैसी नीली, हवा-सी हल्की-फुल्की, पानी-सी चिकनी साड़ी मिले तो खुशी से पहन कर निहाल हो जाऊं।"

राजा बोले--"जरूर, जरूर, सुनहले आंचल से तुम्हारी सोने की देह छिल गई, माखन-सी कोमल देह में टीस उठी। रानी, अब मुस्कराते हुए मुझे विदा करो। अवश्य ही मैं तुम्हारे लिए आसमान जैसी नीली, हवा जैसी हल्की-फुल्की, पानी जैसी चिकनी साड़ी लाऊंगा।"

छोटी रानी ने मुस्कराते हुए राजा को विदा किया।

राजा जहांज पर सवार होने गए तब दुखिया बड़ी रानी की याद आई।

बड़ी रानी अपनी टूटी-फूटी कुटिया में कथरी पर लेटी-लेटी रो रही थी। राजा वहां पहुंचे।

टूटी कुटिया के टूटे दरवाजे पर खड़े होकर राजा बोले--"बड़ी रानी, मैं परदेश जाऊंगा। छोटी रानी के लिए चूड़ियां, हार, पायल और साड़ी लाऊंगा। तुम्हारे लिए क्या लाऊं। यदि किसी बात की साध हो तो कहो।"

रानी बोली--"महाराज, आप कुशल-मंगल से घर लौट आवें, तो उसी से मुझे आठों सिद्धियां और नौ निधियां मिल जाएंगी। जब आप मेरे थे, तब मेरी बड़ी-बड़ी साधें भी थीं। सोने की साड़ी पहनकर, सतमहले मकान में हजारों दिए जलाकर सात सौ सखियों के बीच रानी होकर बैठने की साध थी। सोने के पिंजरे में तोता-तोती के पांव में सोने के घुंघरू पहनाने की साध थी। महाराज, साधें तो बहुत-सी थीं और बहुत-सी साधें पूरी भी हुईं। अब सोने के जेवर, सोने की साड़ी लेकर मैं क्या करूं? महाराज, आज मैं किसके सुहाग में सुहागिन बनकर हीरे के कंगन पहनूं, मोतियों के हार गले में डालूं, रत्न से मांग भरूं? महाराज, वह दिन अब कहां रहे? आप मुझे सोने के जेवर देंगे, पर वह बीते दिनों का सुहाग तो नहीं लौटा देंगे? मेरी वह सात सौ दासियां तो नहीं लौटा देंगे? वन की चिड़ियां ला देंगे, पर अब सोने का पिंजरा तो नहीं देंगे? टूटी-फूटी कुटिया में सोने के जेवर हों तो चोर, डाकू लूट लेंगे। टूटे पिंजरे में वन की चिड़ियां क्यों रहने लगीं? महाराज, आप जाइए, जिसे आपने प्यार दिया उसी की साध पूरी कीजिए। मेरी अब कोई साध नहीं।"

राजा ने कहा--"नहीं, नहीं, रानी! लोग सुनेंगे तो उलाहना देंगे। कहो, तुम्हें क्या चाहिए।"

रानी बोली--"किस मुंह से जेवर की बात करूं? महाराज, मेरे लिए एक मुंहजला बन्दर लेते आइएगा।"

राजा ने कहा--"बहुत अच्छा, रानी। अब विदा होता हूं।"

सुनकर दुखिया बड़ी रानी ने फटी कथरी में औंधी पड़कर रोते-रोते राजा को विदा किया। राजा जाकर जहाज में सवार हो गए।

सांझ को सोने का जहाज सुनहले पाल फहरा कर, अथाह सागर के नीले जल पर तैरता हुआ, सोने के बादल की तरह पश्चिम की ओर चल दिया।

टूटी कुटिया में, फटी कथरी पर लेटी हुई बड़ी रानी नील सागर की ओर एकटक देखती रही और सुहागिन छोटी रानी सतमहले भवन के अन्दर, सात सौ सखियों के बीच, जेवर के बारे में सोचती रही और सोने के पिंजरे में सोने की चिड़िया का गाना सुनती हुई, सोने के पलंग पर सो गई।

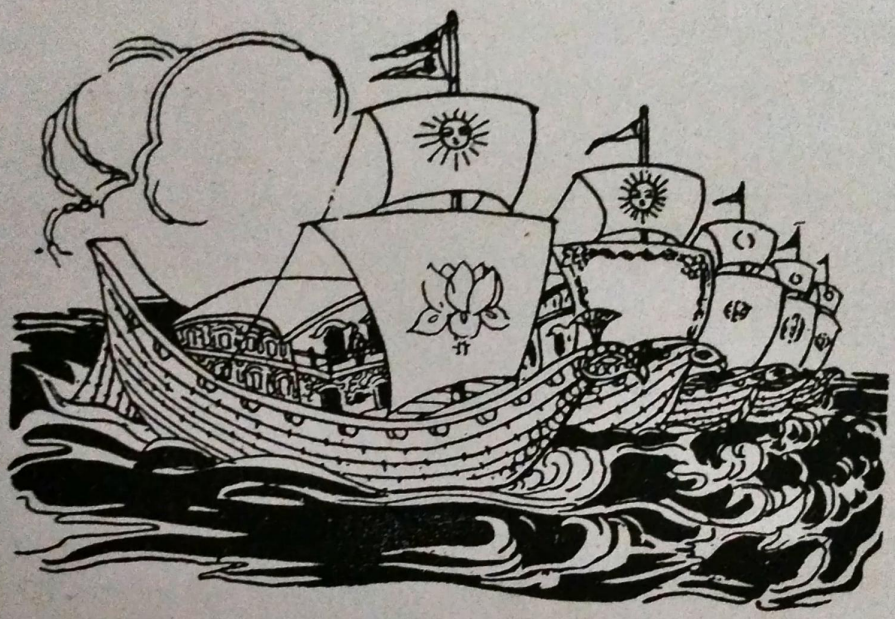

राजा जहाज पर चढ़ते ही बड़ी रानी को भूल गए। विदा के समय छोटी रानी का वह हँसमुख चेहरा याद आता तो वह सोचते--भला, इस समय छोटी रानी क्या कर रही होगी? शायद केश संवार रही होगी और अब छोटी रानी क्या कर रही होगी? शायद गोरे-गोरे पांवों को आलते से रंग रही होगी। अब शायद रानी सात वाटिका में घूम-घूम कर फूल चुन रही होगी और मेरी याद कर रही होगी। शायद मेरी बात सोच कर उसकी दोनों आंखें डबडबा आई होंगी, माला पूरी नहीं हो पाई होगी। सोने का धागा फूल की टोकरी के नीचे पड़ा होगा। बैठे ही बैठे शायद रानी की सारी रात बीत गई होगी, नींद ही नहीं आई होगी।

छोटी रानी की बात ही राजा सोचते रहते और बड़ी रानी को, जो राजा के लिए बावली-सी हो गई, राजा कभी याद भी नहीं करते थे।

इसी तरह दिन बीतते गए और देश-विदेश घूमते-घूमते बारह महीने बीत गए।

तेरहवें महीने राजा का जहाज रत्नों के देश में पहुंचा।

रत्नों के देश में रत्न ही रत्न थे। घर की दीवारें रत्न की थीं। वे घर भी रत्नों के थे। रास्ते के कंकड़ भी रत्न ही थे। राजा ने उसी रत्नों के देश में रानी के लिए चूड़ियां बनवाईं। आठ हजार रत्नों से आठ चूड़ियां बनाई गईं। पहनने से जैसे खून फटा पड़ रहा हो।

राजा रत्न की वे चूड़ियां लेकर सोने के देश में पहुंचे। स्वर्ण-देश में आकर सुनार की दुकान से ठोस सोने के दस पायल बनवाए। पायल चिनगारी की तरह चमकने लगे, उनकी रुमझुम आवाज जैसे वीणा की झंकार की तरह गूंज उठी।

राजा रत्न देश से रत्न की चूड़ियां और स्वर्ण-देश से सोने के पायल बनवाकर मुक्ता-देश में पहुंचे।

वहां के राजा के बगीचे में दो कबूतर थे। उनके पांव मोती के और ओंठ रत्न के बने हुए थे। पन्ना के पेड़ से मोती के फल खाकर वे मोती के अण्डे देते थे। वहां की रानी सांझ को उन्हीं मोतियों की माला गूंथती थी, उसे रात को जूड़े में पहनती थी और सुबह फेंक देती थी।

उसकी दासियां, बासी मोती के हार को एक जहाज चांदी के बदले बाजार में बेच देती थीं।

राजा ने एक जहाज चांदी देकर छोटी रानी के गले में डालने के लिए मोती का एक हार खरीद लिया।

चूड़ियां, पायल और हार लेकर छः महीने के बाद राजा एक दूसरे मुल्क में पहुँचे। उस मुल्क की राजकुमारी के उपवन में नीलम के पेड़ में रेशम के नीले कीड़े नीलकांत मणि के पत्ते खाकर पानी-से चिकने, हवा-से हल्के-फुल्के, आसमान से नीले रेशम के कोये तैयार करते थे। राजकुमारी सारी रात ऊपर खुली छत पर बैठकर आसमान के रंग में रंग मिलाकर उसी नीले रेशम से रेशमी साड़ी बुनती थी। एक साड़ी बुनने में छः महीने लग जाते थे। राजकुमारी केवल एक दिन के लिए आसमान-सी नीली, हवा-सी हल्की-फुल्की, पानी-सी चिकनी साड़ी को पहनकर शिवजी के मन्दिर में भगवान नीलकण्ठ की पूजा करती थीं। घर लौटकर साड़ी उतार देती थीं। दासियां सात जहाज सोने के बदले उसे बेच देती थीं। राजा ने सात जहाज सोना देकर छोटी रानी के लिए साड़ी खरीद ली।

उसके बाद छः महीने में राजा के सात जहाज सात समुद्र और तेरह नदियां पारकर छोटी रानी के लिए रत्न की चूड़ियां, सोने के पायल, मोती का हार और साड़ी लिए जब अपने राज्य में पहुंचे, तो उन्हें याद आया कि बड़ी रानी ने एक बन्दर मांगा था। राजा ने मन्त्री को बुलाकर कहा—"मन्त्री, एक बात की भूल हो गई। बड़ी रानी के लिए कुछ नहीं लाए, तुम एक बन्दर ढूंढ़ो।"

राजमन्त्री, एक बन्दर ढूंढ़ने गए और राजा सफेद हाथी पर सवार होकर लोगों से भरे हुए राजपथ से, छोटी रानी की साध के गहने-साड़ी लिए अन्दर महल में गए।

छोटी रानी तब सतमहले भवन की सातवीं मंजिल में बैठकर सोने के शीशे के सामने, सोने की

कंघी से बाल काढ़ कर, सोने के कांटे और सोने की चोटी से जूड़ा बनाकर, माथे में सिन्दूर का टीका लगा रही थीं। कजरौटी में काजल बनाकर आंख में काजल आंज रही थीं। गोरे-गोरे पांवों में आलता रंग रही थीं। सखियां फूल की थाली लिए, पान की डिबिया लिए, छोटी राजरानी की सेवा कर रही थीं। राजा वहां आ पहुंचे।

स्फटिक के सिंहासन पर रानी की बगल में बैठकर राजा ने कहा--"लो रानी, रत्न-देश से, जहां पर रत्न के घाट और रत्न के बाट हैं, वहीं से तुम्हारे लिए ये सुन्दर चूड़ियां लाया हूं। स्वर्ण-देश से, जहां की धूल-रेत भी सोने की है, वहीं से तुम्हारे लिए पायल लाया हूं। मुक्ता देश में मोती के पांव और रत्न के ओठों वाली दो चिड़ियां हैं। वे मोती के अण्डे देती हैं। वहां की रानी उन्हीं मोतियों से हार गूंथती है। रात को जूड़े में पहनती है और सुबह उसे फेंक देती है। रानी, तुम्हारे लिए उसी मोती का हार लाया हूं। एक मुल्क की राजकुमारी एक रेशम के धागे से सात सूत निकाल कर सुनसान रात में, ऊपर खुली मंजिल में बैठकर छः महीने में एक साड़ी बुनती है। केवल एक दिन उसे पहनकर पूजा करती है और घर आते ही उसे उतार देती है। रानी, मैं उसी राजकन्या के देश से, सात जहाज सोना देकर, राजकन्या के हाथ की बनी हुई साड़ी लाया हूं। एक बार इसे छुओ तो सही! दुनिया भर से ढूंढ़ कर मैं तुम्हारे लिए साड़ी और जवाहरात लाया हूं। जरा, पहनकर देखो तो।"

रानी ने अपनी दो कलाइयों में आठ चूड़ियां पहनीं। रत्न की वे चूड़ियां रानी की कलाई में ढीली आईं। कलाई से वे कन्धे पर आ गईं। तब रानी ने दो पैरों में दस पायल पहने। गोरे-गोरे पांवों में सोने के पायल ढीले आए। दो कदम चलते ही वे खुल कर फर्श पर बिखर गए। रानी ने मुंह बनाकर मोती का हार गले में डाला तो वह हार रानी के गले में छोटा पड़ा। पहनने से गला घुटने-सा लगा। रानी को दर्द हुआ।

रानी ने सात लपेट देकर साड़ी पहनी तो नीले रंग की वह रेशमी साड़ी लम्बाई और चौड़ाई दोनों में कम निकली। रानी की आंखों में आंसू भर आए।

तब छोटी रानी ने आठ हजार रत्नों की आठ चूड़ियां खोलकर फेंक दीं, ठोस सोने के दस पायल पांव से हटा कर, मोतियों का हार और रेशम की साड़ी धूल में डाल दी।

रानी ने कहा--"ये क्या खाक गहने हैं! साड़ी दो कौड़ी की है, किस रास्ते से कंकड़ चुनकर ये चूड़ियां बनवाई? महाराज! कौन से मुल्क की धूल और रेत से ये पायल बनवाए? छिः! छिः! किसके बासी मोतियों का यह बासी हार है? यह कौन-सी राजकन्या की उतारी हुई साड़ी है? ले जाओ महाराज, यह दूसरे की उतारी हुई साड़ी और गहनों की मुझे कोई जरूरत नहीं है।"

रानी ने रूठ कर कोपगृह में जाकर किवाड़ बन्द कर लिए और राजा उदास होकर सात जहाज सोने से खरीदी हुई साड़ी और गहने लेकर दरबार में पधारे।

राजसिंहासन के एक बगल में राजमन्त्री सारे राज्य के रास्ते, मकान, दुकान, बाजार आदि ढूंढकर, जादूगरों के देश के एक बनिए के जहाज से एक फूटी कौड़ी देकर, एक बन्दर का बच्चा खरीद कर बैठे थे।

राजा ने आकर कहा--"मन्त्री, ताज्जुब की बात है कि मैं नाप देकर छोटी रानी के लिए साड़ी-जेवर लाया, पर वह साड़ी और जेवर छोटी रानी के बदन पर आए ही नहीं।"

सुनकर उस वन के बन्दर ने राजा को अभिवादन किया और कहा--"बड़ी ही भाग्यवती और पुण्यवती स्त्री के अलावा देवकन्या के हाथ से तैयार किए गए, माया राज्य के मायावी गहने और कोई नहीं पहन सकता। महाराज, उन्हें उठाकर रख दीजिए। जिसे आप अपनी पतोहू बना कर लाएंगे, उसे पहनाइएगा।"

बन्दर की बात सुनकर राजा दंग रह गए। हँसते हुए मन्त्री से बोले--"मन्त्री, यह बन्दर क्या बोल रहा है? लड़का ही नहीं हुआ तो बहू कैसे आएगी? मन्त्री, तुम सुनार के पास जाकर छोटी रानी के लिए नए गहने बनने के लिए दो। जुलाहे के पास नई साड़ी बुनने को दो। यह साड़ी-जेवर राज-भण्डार में रख दो। अगर कभी बहू घर पर लाऊंगा, तो उसे पहनने के लिए दूंगा।"

राजमन्त्री ने सुनार की दुकान में जाकर छोटी रानी के लिए नए गहने गढ़ने को दिए और राजा उस बन्दर को गोद में लिए हुए बड़ी रानी के पास पहुंचे।

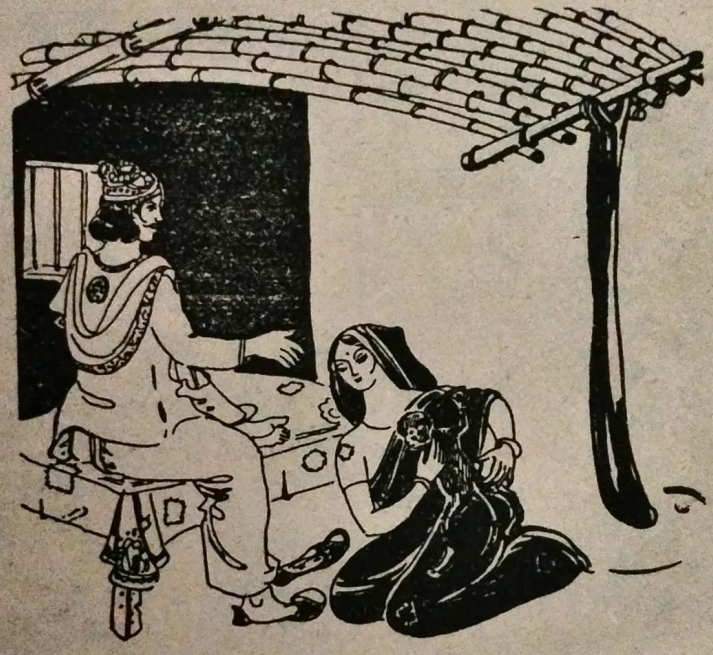

दुखिया बड़ी रानी ने अपनी फटी साड़ी के आंचल से राजा के पांव पोंछकर अपनी टूटी कुटिया की फटी कथरी पर राजा को बैठाया। फिर रोती हुई बोली--"महाराज, पधारिए! बैठिए, मेरे इस टूटे-फूटे घर में फटी कथरी पर बैठिए। मेरे पास आपके योग्य और तो कुछ भी नहीं है। हाय! महाराज, कितने दिनों के बाद आप लौट कर आए, पर मैं ऐसी अभागिन हूं कि मैंने आपके लिए फटी कथरी ही बिछाई।"

रानी की बात सुनकर राजा की आंखों में आंसू आ गए। टूटे-फूटे घर की फटी कथरी पर बैठ कर राजा ने बड़ी रानी की गोद में उस बन्दर के बच्चे को देकर कहा--"महारानी, तुम्हारी यह फटी कथरी, टूटा-फूटा घर, छोटी रानी के सोने के सिंहासन और सोने के कमरे से लाख दर्जे अच्छा है। तुम्हारे इस टूटे घर में प्यार है, आदर है, दो मीठी बातें भी हैं, पर वहां यह सब कुछ भी नहीं है। रानी, मैं सात जहाज सोना देकर जेवर-साड़ी लाया, पर छोटी रानी ने उन्हें पांवों से ठुकरा दिया। एक छूटी कौड़ी देकर मैं तुम्हारे लिए बन्दर लाया हूं, तुमने उसे प्यार से गोद में ले लिया। रानी, मैं फिर तुम्हें कभी दुख नहीं दूंगा। अब विदा करो, रानी मैं फिर आऊंगा। पर देखना, छोटी

रानी को इस बात का पता न लग जाए कि मैं तुम्हारे पास आया था। यदि यह बात उसके कानों में पड़ गई तो वह मेरी जान खा जाएगी। तुम्हें या मुझे वह जहर देकर ही मानेगी।''

राजा बड़ी रानी को तसल्ली देकर चले गए और बड़ी रानी अपने टूटे-फूटे घर में उस बन्दर को दूध पिलाकर और केला खिलाकर पालने-पोसने लगी।

इसके बाद कितने ही दिन बीत गए। छोटी रानी के दिन सात महलों में सात सौ दासियों के बीच बीतते और बड़ी रानी के उस टूटे-फूटे घर में फटी कथरी और बन्दर के साथ बीतते जा रहे थे। कितने ही दिन, कितने ही महीने, कितने ही साल बीत गए। बड़ी रानी का दुख वैसा ही बना रहा। मोटे-मोटे चावल का भात, मोटे सूत की साड़ी के अलावा और कुछ उसे नसीब नहीं था। बड़ी रानी उस टूटे-फूटे घर में दुख से दुखी और साथ देने वाले साथी उस बन्दर को लेकर, छोटी रानी के सतमहले मकान और सात वाटिकाओं की ओर देखकर रोती रहती। बन्दर जब भी देखता तो बड़ी रानी को रोती ही पाता। उसने एक दिन के लिए भी उसे हंसते नहीं देखा।

एक दिन बन्दर ने पूछा--''मां, तू रोती क्यों है? तुझे किस बात का दुख है? राजा के महल की ओर देख-देख कर तू रोती क्यों है? वहां पर तेरा कौन है?''

रानी ने कहा--''बेटा, वहीं पर मेरा सब कुछ है। वहां मेरा सतमहला मकान है, सात सौ दासियां हैं, सात सन्दूक भरे गहने हैं, सात बगीचे हैं। बेटा, उसी सतमहले मकान में राजा की छोटी रानी—मेरी सौत—रहती है। उसी राक्षसी ने मेरे राजा को जादू से अपने वश में करके मेरा सतमहला मकान, सात सौ दासियां और सात सन्दूक गहने छीन लिए हैं। वह चैन से रहती है। उसने मेरे सर्वस्व, मेरे राजा को छीनकर मुझे कंगालिन बना दिया है। बेटा, मुझे क्या दुख था। मैं राजकन्या थी। राजा की दुलहिन बन कर आई थी। सात सौ दासियां मिलीं। सतमहला मकान मिला। मन के लायक पति मिला। सब कुछ मिला, पर कौन जाने मेरे जीवन पर किसका शाप रहा कि राजा की गोद में एक चांद-सा राजकुमार नहीं दे पाई। न जाने कितने लोगों की साध पर राख डाली होगी, न जाने कितनी मांओं के दिलों को दुख पहुंचाया होगा। इसलिए जीते जी अपनी सोने की गृहस्थी सौत के हाथ सौंपकर रानी के गौरव, पति के सुहाग, बेटे की मां बनने की सब साध खोकर भिखारिन बनी हूं। बेटा, मैं बड़े कठोर दिल की हूं, तभी तो इतने दिन से इतना अपमान, दुख, कष्ट सब सह कर भी जिन्दा रह रही हूं।''

अपने दुख की कहानी सुनाते-सुनाते आंसू से रानी का आंचल भीग गया। तब वह वन का बन्दर रानी की गोद में जाकर बैठ गया और उसके आंसू पोंछ कर बोला--''मां, तू रो मत। मैं तेरे दुख को दूर करूंगा। तेरे सतमहले मकान लौट आएंगे। मैं तेरे सातों बगीचे और सात सौ दासियां लौटा दूंगा। जब मैं तुझे सोने के महल में रानी बना कर तेरी गोद में एक राजकुमार ला दूंगा, तभी मेरा बन्दर जन्म सार्थक होगा। मैं जैसा कहूं, यदि तू वैसा ही कर सके, तो तुझे पहले जैसा प्यार और दौलत हासिल हो सकती है।''

बन्दर की बातें सुन कर रानी की आंखों में आंसू आ गए, परन्तु उसके ओठों पर मन्द मुस्कराहट खेलने लगी। रानी रोते-हंसते बोली--"बेटा! देवता के मन्दिर में कितनी ही बलि दी, तीर्थों में कितनी पूजा की, लेकिन फिर भी मेरी गोद नहीं भरी। तू एक बन्दर मात्र है। ऐसी कौन-सी तपस्या करके, किस देवता के वर से मुझे फिर से राजरानी बना देगा? मेरी गोद में राजकुमार ला देगा? रहने दे बेटा, राजा सुख से रहें, मेरी सौत सुख से जिए। मेरा जो दुख है वैसा ही रहे, तुझे कोई भारी मुसीबत उठाने की जरूरत नहीं है। रात बहुत हुई, बेटा! जा, अब तू सो जा।"

बन्दर ने कहा--"नहीं मां, तू जब तक मेरा कहना न मानेगी, मैं नहीं सोऊंगा।"

रानी ने कहा--"बेटा, तू सो जा। रात बहुत हुई। पूरब पश्चिम के बादल आकाश में छा गए हैं, घनघोर घटाएं छाई हुई हैं, मूसलाधार पानी बरस रहा है। सारी दुनिया सो गई है, अब तू भी सो जा, मेरे बेटे! कल तू जो भी कहेगा मैं सब मान लूंगी, आज तो तू सो जा। आंधी आ रही है। मैंने टूटी कोठरी पर सांकल चढ़ा दी है। कोठरी में कथरी बिछी है। ठण्ड पड़ रही है। तू दुधमुहां बच्चा है। मेरी छाती से लिपट कर गोद में सो जा।"

बन्दर रानी की गोद में सिर रख कर सो गया। रानी भी फटी कथरी सिरहाने रख कर सो गई।

इसी तरह रात कटी। छोटी रानी की रात सोने की बनी हुई और फूलों से सजी हुई सेज पर बीती।

सवेरा हुआ। राजमहल के पहरेघर में पहरे की घंटी बजी, नौबतखाने में नौबत बजी। राजा-रानी की नींद टूटी!

राजा ने सोने के बर्तन से निर्मल पानी लेकर मुंह धोया। इसके बाद अपना राजकीय लिबास पहन कर दरबार में चले गए। छोटी रानी सोने के पलंग पर फूलों के पंखों की हवा खाते-खाते करवट बदल कर फिर सो गई।

और बड़ी रानी, टूटी झोंपड़ी में सुनहली धूप मुंह पर पड़ी तो उठ बैठी। इधर-उधर देखा तो बन्दर नदारद। रानी ने कमरा ढूंढ़ा, फिर घर का छप्पर देखा, पेड़ की डाल देखी, पर बन्दर कहीं नहीं मिला। तब बड़ी रानी रोने लगी। भला बन्दर कहां गया?

बन्दर तो टूटी झोंपड़ी में सोती हुई रानी को अकेला छोड़ कर सवेरा होते ही राज-दरबार में जा डटा था।

राजा दरबार में शोभायमान थे। उनके चारों ओर मन्त्री, दरबारी तथा सिपाही आदि थे। चारों ओर लोगों की भीड़ थी। रानी के बन्दर ने लोगों की भीड़ हटा कर, सिपाहियों से बच कर राजा के चरणों में प्रणाम किया और कहा--"महाराज, बहुत बड़ी खुशखबरी लाया हूं। मेरी मां के बच्चा होने वाला है।"

राजा ने कहा--"अरे बन्दर! यह तू कह क्या रहा है? क्या यह बात सच है? बड़ी रानी के बच्चा होने वाला है? पर अगर यह बात झूठ साबित हुई तो मैं तुझे और तेरी रानी दोनों को मरवा डालूंगा।"

बन्दर ने कहा--"यह जिम्मेवारी मेरी है। अब मुझे खुश कीजिए, मैं विदा होऊं।"

राजा ने अपने गले से गजमुक्ता का हार देकर उसे विदा किया। बन्दर नाचता हुआ, टूटी झोंपड़ी में जहां बड़ी रानी पड़ी-पड़ी रो रही थी, पहुंचा।

रानी की आंखों से आंसू पोंछ और बदन से धूल झाड़ कर बन्दर बोला--"यह देख मां, मैं तेरे लिए क्या लाया हूं। तू राजरानी है, फिर भी लकड़ी की माला पहनती है। अब तू यह गजमुक्ता हार पहन।"

रानी ने बन्दर के हाथों में गजमुक्ता का हार देखकर कहा--"तूने यह हार कहां से पाया। यह तो राजा के गले का गजमुक्ता हार है। जब मैं रानी थी, तब मैंने उन्हीं के लिए इसे बनवाया था। भला, तू इसे कहां से पा गया? क्या राजा ने इसे रास्ते में डाल दिया था, जो तू इसे उठा लाया?"

बन्दर ने कहा--"नहीं मां, मैंने इसे रास्ते से नहीं उठाया। तेरे हाथों का बनाया हुआ मोती का हार भला ऐसे कब मिल सकता है?"

रानी ने कहा--"तो क्या तू राजा के यहां से इसे चुरा लाया है?"

बन्दर ने कहा--"छि:! छि:! मां, क्या बात कहती हो, मै कभी चोरी कर सकता हूं? आज मैंने राजा को खुशखबरी दी है, इसलिए राजा ने खुश होकर मुझे यह हार दिया है।"

रानी बोली--"अरे! ओ जंगल के बन्दर! इस दुखिया के घर में रह कर तुझे इस टूटी झोंपड़ी से कौन-सी ऐसी खुशखबरी मालूम हुई कि तू राजा तक उसे पहुंचाने के लिए मुंह अंधेरे ही दौड़ गया।"

बन्दर बोला--"मां, मैंने यह स्वप्न देखा है कि मेरा एक भाई हुआ है। तेरे बच्चा हुआ और वह सिंहासन पर बैठकर राजा बना है। इसलिए मैंने दौड़ कर यह खबर राजा को दी कि महाराज मेरी मां के बच्चा होगा। राजा सुनकर खुश हुए और उन्होंने अपने गले का हार निकाल कर मुझे दे दिया।"

रानी बोली--"बेटा, राजा ने आज सुना कि बच्चा होगा और कल सुनेंगे कि यह झूठी बात है। आज राजा ने गले से निकाल कर हार दिया है, पर कल गर्दन काटने का हुक्म देंगे। हाय! हाय! तूने यह क्या अनर्थ कर दिया? एक मुट्ठी अन्न खाने को मिलता है, एक तरफ पड़ी रहती हूं। साल में एक बार राजा के दर्शन मिलते हैं, तूने यह सुख भी खतम कर दिया। अरे! तूने यह क्या सर्वनाश कर दिया? तूने झूठी खबर क्यों फैला दी? बैठे बिठाए यह आफत क्यों मोल ले ली?"

बन्दर ने कहा--"मां, तुझे किस बात का डर है? तू क्यों परेशान होती है। दस महीने चुपचाप रह। सब जान जाएं कि बड़ी रानी के बच्चा होने वाला है। फिर राजा जब लड़का देखने आएंगे, तब तेरी गोद में सोने के चांद जैसा लड़का ला दूंगा। तू उसे राजा को दिखा देना। अब चल। देर हो गई, मुझे भूख लगी है।"

रानी ने कहा--"चल बेटा, कटोरी में पानी रख दिया है। पेड़ों से फल लाई हूं। खा ले।"

रानी ने टूटे हुए पटरे पर बन्दर को खिलाने के लिए बैठाया।

राजा छोटी रानी के कमरे में गए।

छोटी रानी उस समय कोई बुरा स्वप्न देखकर जाग उठी थी और सोने के पलंग पर बैठकर कुछ सोच रही थी। तभी राजा ने आकर खबर दी--"सुनती हो छोटी रानी, बड़ी रानी के बच्चा होने वाला है। मैं बड़ी परेशानी में था कि सिंहासन किसे दे जाऊंगा, पर अब मेरी चिन्ता दूर हुई। अगर लड़का हुआ तो उसे राजा बनाऊंगा और यदि लड़की हुई तो उसे ब्याह कर दामाद को राजा बनाऊंगा। रानी! मुझे बड़ी परेशानी थी, अब मैं बेफिक्र हुआ।"

रानी ने जवाब दिया--"अरे, जाने भी दो। मैं अपनी ही चिन्ता से मर रही हूं, फिर दूसरे की चिन्ता कौन करे।"

राजा ने कहा--"यह कैसी बात कह रही हो रानी? ऐसे शुभ दिन में क्या ऐसी मनहूस बात

कहनी चाहिए? राजकुमार को गोद में लूंगा, सिंहासन पर बैठाऊंगा--यह सुनकर तुम मुंह बना रही हो। रानी, राजमहल में सब के मुंह पर हँसी छिटक रही है और तुम अशगुन कर रही हो!''

रानी ने कहा--''मैं यह सब नहीं जानती कि किसका लड़का राजा होगा, किसकी लड़की राज करेगी और कौन सिंहासन पर बैठेगा, मैं अपनी ही बात सोचकर परेशान हो रही हूं। दूसरे का लड़का मरे या जिए, मेरी बला से। बाप-रे, बाप! सुबह-सुबह उठ कर इतनी बक-झक की। सारी रात नींद नहीं आई, सिर में दर्द हो गया। जाऊं, नहा आऊं।''

गुस्से में भर कर छोटी रानी आठों चूड़ियां और दसों पायलें झमझमा कर एक तरफ चली गई।

राजा को रानी का जवाब सुन कर गुस्सा आया। वह मुंह बना कर रानी के महल से चले गए। राजा और रानी में झगड़ा हो गया। राजा ने फिर छोटी रानी का मुंह भी नहीं देखा। राजा बड़ी रानी के पास भी इसलिए नहीं गए कि कहीं छोटी रानी सुनकर बड़ी रानी को जहर न दिलवा दे। वह बाहर महल में अकेले ही रहने लगे।

एक महीना बीत गया, दूसरा भी बीत गया और फिर तीन महीने हो गए। राजा रानी में मेल नहीं हो पाया। झगड़े में ही चार महीने बीत गए। पांचवें महीने बड़ी रानी के पाले हुए बन्दर ने राजा के साथ भेंट की। राजा ने उत्सुकता से उससे पूछा--"कहो, क्या खबर है।"

बन्दर ने जवाब में कहा--"महाराज, मेरी मां को बड़ी तकलीफ है। वह मोटे चावल का भात नहीं खा सकती और बिना खाए बेचारी कमजोर हो गई है।"

राजा ने कहा--"यह बात तो मुझे मालूम ही नहीं थी।" फिर मन्त्री से कहा--"मन्त्री, अभी जाकर महीन चावल और पचास तरह की सब्जियां, सोने के बर्तनों में परोस कर, बड़ी रानी के पास भेजो। आज से जो मैं खाता हूं, बड़ी रानी को भी वही खाना मिलेगा। मन्त्री! जाओ और बन्दर को एक हजार मोहरें देकर विदा करो।"

बन्दर को विदा करके मन्त्री रसोई घर में गया और बन्दर मोहरों की थैली लेकर रानी के पास पहुंचा। रानी ने पूछा--"तू आज फिर कहां चला गया था? इतनी देर हो गई। अभी तक मैं नहा नहीं पाई। कब रसोई करूंगी और कब खाऊंगी।"

बन्दर ने कहा--"मां, तुझे अब और रसोई नहीं बनानी पड़ेगी। राजमहल से सोने के बर्तनों में महीन चावल और पचास सब्जियां आ रही हैं। तू जल्दी से नहा कर आ।"

रानी नहाने चली गई। बन्दर इसी बीच एक मुट्ठी मोहरें लेकर बाजार गया। सोलह मोहरों में सोलह मजदूर लाया। साथ ही वह सोलह गाड़ी पुआल और सोलह सौ बांस भी लाया। सोलह गाड़ी पुआल और सोलह सौ बांस और सोलह मजदूरों को लेकर, उसने पलक झपकाते ही बड़ी रानी के टूटे-फूटे मकान को नया बनवा दिया। सोने के कमरे में नया गलीचा बिछा दिया। खाने की जगह पर नया पीढ़ा बिछा दिया। राजमहल के सोलह रसोइए रानी के लिए खाना ले आए। बन्दर ने उन्हें सोलह मोहरें इनाम में दीं।

बड़ी रानी नहा कर आई। उसने देखा कि घर नया हो गया है। छप्पर भी नया है और छप्पर का पुआल भी नया। जमीन पर नर्म गलीचा बिछा है और अरगनी पर नई साड़ी टंगी है। वह हैरान रह गई और उसने बन्दर से पूछा--"बेटा, मैं जब तालाब में नहाने गई थी तो टूटा-फूटा मकान देखकर गई थी। नहाकर आई तो घर को नया देखा। ऐसा कैसे हो गया?"

बन्दर ने जवाब दिया--"मां, महाराज ने यह मोहरें दी थीं। उन्हीं मोहरों से टूटे हुए घर को नया बनवाया, फटी कथरी की जगह नया गलीचा और नया पीढ़ा ले आया। तू चल और सोने की थाली में गरम-गरम भात खा और सोने का कटोरा भर कर गरम दूध पी।"

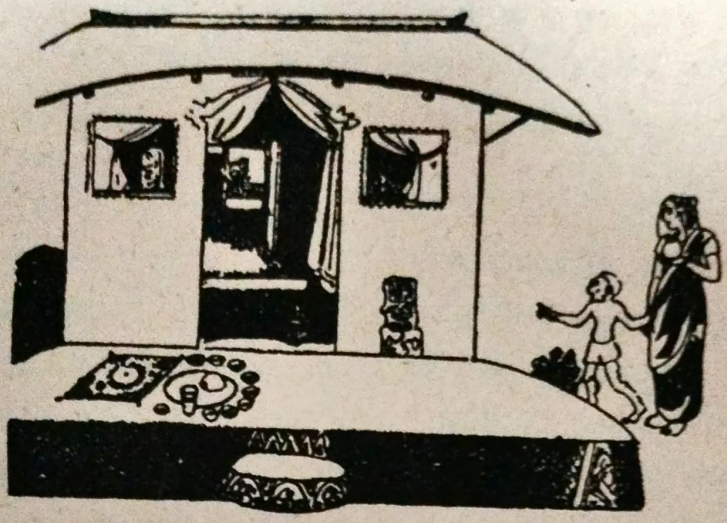

रानी खाने के लिए बैठी। न जाने कितने दिनों के बाद उसने फिर सोने की थाली में खाना खाया, सोने की कटोरी से दूध पिया, सोने के लोटे से मुंह धोया और फिर सोने के डिब्बे में से पान खाया। पर उसके मन में कोई सुख नहीं था। रानी छप्पन प्रकार के भोजन करती थी और सोचती थी कि आज तो राजा ने सोने की थाली में खाना भेज दिया, पर कल शायद श्मशान में ले जाकर सिर काटेंगे।

इसी तरह एक के बाद एक करके तीन महीने बीत गए। बड़ी रानी का नया घर फिर से पुराना हो गया। घर के छप्पर में छेद हो गए पुआल सड़ गया। बन्दर ने फिर राजा से भेंट की।

राजा ने पूछा--"कहो जी, क्या हाल है?"

बन्दर ने कहा--"महाराज, अभय मिले तो कहूं।"

राजा ने कहा--"तुम निर्भय होकर बोलो।"

तब बन्दर बोला--"महाराज, टूटे घर में मेरी मां को बड़ी ही तकलीफ होती है। घर के दरवाजे टूट गए हैं, छप्पर में पुआल नहीं है, घर में ठण्डी हवा भर जाती है। मेरी मां के पास ओढ़ने के लिए न तो रज़ाई है और न आग जलाने के लिए लकड़ी है। बेचारी सारी रात जाड़े से कांपती रहती है।"

राजा ने कहा--"उफ्! यह बात तो तुम्हें मुझे पहले ही बता देनी चाहिए थी। बन्दर, तू अपनी मां को राजमहल में ले आ। मैं महल सजाने का हुक्म दे रहा हूं।"

बन्दर ने कहा--"महाराज, मां को राजमहल में लाने में डर मालूम होता है। कहीं छोटी रानी उन्हें जहर न दे दें।"

राजा ने कहा--"डरो नहीं। मैं बड़ी रानी को नए महल में रखूंगा। महल घेर कर दीवार बनवाऊंगा, दरवाज़े पर पहरेदार रहेंगे, छोटी रानी अन्दर नहीं आ सकेगी। वहां केवल उनकी बहरी और गूंगी दासी और पाला हुआ बेटा तू रहेगा।"

बन्दर ने कहा--"तो जाऊं महाराज, मां को ले आऊं।"

राजा ने मन्त्री को बुला कर कहा--"मन्त्री, महल सजाओ।"

मन्त्री ने लाखों आदमी लगाकर एक दिन में ही महल सजवा दिया।

बड़ी रानी अपने टूटे-फूटे घर को छोड़ कर, फटी कथरी को फेंक कर, सुनहली साड़ी पहन कर नए महल में आ गई। सोने के पलंग पर बैठी, सोने की थाली में भोजन किया और दीन-दुखियों को दान दिया। राज्य में उसकी जय-जयकार हुई। यह सब जानकर गुस्से से छोटी रानी का जी जलने लगा।

एक डायन बुढ़िया छोटी रानी की बड़ी प्यारी सहेली थी। छोटी रानी ने उसे बुलावा भेजा कि मेरी प्यारी सहेली को बुलाओ, उससे कुछ काम है।

रानी का बुलावा था। डायन बुढ़िया तुरन्त हाज़िर हुई।

रानी ने कहा--"आओ, बहन कहो, अच्छी तो हो? आओ मेरे पास बैठो।"

डायन बुढ़िया आकर छोटी रानी के पास बैठ गई और बोली--"कहो बहन, तुमने मुझे किस लिए बुलाया? अरे! तुम्हारा तो मुंह उतरा हुआ है और आंखें डबडबा रही हैं। क्या बात है?"

रानी ने जवाब दिया--"बात क्या है, मेरा सिर। सौदा फिर घर में आ गई। वह सुनहली साड़ी पहनती है, उसे रहने के लिए नया महल मिल गया है और अब वह राजा की सुहागिन बन गई है। इतने दिनों के बाद कल की कंगालिन बड़ी रानी फिर सुहागिन छोटी रानी पर हुक्म चला रही है। सौत की इतनी आवभगत मुझसे नहीं सही जाती। तू मुझे जहर ला दे, मैं खा कर मर जाऊं।"

बुढ़िया ने कहा--"राम! राम!! ऐसी बात जबान पर भी नहीं लानी चाहिए। बड़ी रानी आज सुहागिन बनी है, कल फिर वह कंगालिन होगी। तुम जैसी थीं, फिर से वैसी ही सुहागिन बन जाओगी।"

छोटी रानी ने कहा--"नहीं बहन, अब तो जीने की तबीयत नहीं होती। दो दिन के बाद बड़ी रानी की कोख आबाद होगी, उसे राज्य मिलेगा। लोग कहेंगे--अहा! बड़ी रानी ने रत्न जाया है, वह राजकुमार की मां है। और मुंह जली बांझ छोटी रानी, राजा की सुहागिन बनी रही, फिर भी उसकी गोद नहीं भरी। छि:! छि:! ऐसी अभागिन का तो नाम भी मुंह पर नहीं लाना चाहिए। उसका तो नाम भी मुंह से निकालने पर दिन भर का फाका हो जाता है। बहन, यह उलाहना मुझसे सहा न जाएगा। तू मुझे जहर दे दे। या तो मैं खाऊं या फिर सौत को खिलाऊं।"

बुढ़िया ने कहा--"चुप भी रहो रानी। दीवार के भी कान होते हैं। कोई सुन लेगा... चिन्ता किस बात की है? मैं चुपके से जहर ला दूंगी। तुम बड़ी रानी को खिला देना।....तो अब जहर की खोज में जाती हूं।"

रानी ने कहा--"तो जाओ बहन, पर ख्याल रहे कि जहर असली हो। खाते ही बड़ी रानी की जान निकल जाए।"

डायन ने कहा--"तुम कुछ फिकर मत करो, बहन! मैं जल्दी ही बड़ी रानी को तेज जहर दे दूंगी। उसकी मां बनने की साध हमेशा के लिए खतम हो जाएगी। तुम मन में कोई खटका न रखो।"

जहर की खोज में डायन बुढ़िया दिन भर जंगल में मारी-मारी फिरती रही। ठीक संध्या के समय उसे एक झाड़ी के पीछे एक काला नाग सोता हुआ दिखाई पड़ा। उसने फौरन मंत्र फूंक कर उसे अपने वश में किया और फिर उसके मुहं में से जहर की थैली निकाल ली।

छोटी रानी ने उस जहर को खोये की बरफी और मोती-चूर के लड्डू में मिला दिया। फिर उन्हें एक थाल में संजो कर बुढ़िया से कहा--"बहन, मेरा एक काम करो। यह जहरीली मिठाई तुम बड़ी रानी के पास दे आओ।"

बुढ़िया थाली लेकर बड़ी रानी के महल में पहुंची। बड़ी रानी ने उसे बड़े आदर के साथ बुलाकर बैठाया और कहा--"इतने दिनों कहां रही, बहन? मुझ पर दुःख का पहाड़ टूटा था, क्या इसीलिए तुम मुझे भूल गई थी?"

डायन ने कहा--"बहन, तुम कैसी बात कर रही हो? मैं तो तुम्हीं लोगों का खा पीकर जी रही हूं। भला, मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं। यह लो, मैं तुम्हारे लिए कितने बढ़िया लड्डू और बरफी लाई हूं।"

रानी ने देखा कि बुढ़िया बड़े ही यत्न से थाली भर कर मिठाई लाई है तो उसने खुशी के मारे मोहरों से उसका दामन भर दिया।

बुढ़िया के जाने के बाद जब रानी ने खोये की बरफी का एक टुकड़ा मुंह में लिया तो उसके मुंह का स्वाद चला गया, मूंग का लड्डू खाया तो गला सूख गया और मोतीचूर का लड्डू खाया तो उसके छाती में आग-सी लग गई। तब उसने बन्दर को बुलाया और कहा--"बुढ़िया ने न जाने मुझे क्या खिला दिया। तबीयत एकदम खराब हो गई। जी मिचला रहा है। अब मैं नहीं बचूंगी।"

बन्दर ने कहा--"मां, चलकर तू पलंग पर लेट जा। घबरा मत, तबीयत ठीक हो जाएगी।"

रानी उठकर खड़ी तो हो गई, पर सांप का जहर चढ़ चुका था। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। सोने की मूर्ति के समान सुन्दर बड़ी रानी चक्कर खाकर धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ी।

बन्दर ने रानी का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसकी नाड़ी देखी। आंखों की पलकें उठाकर देखा कि रानी बेहोश है।

बन्दर बड़ी रानी को पलंग पर लिटाकर खुद दवा की खोज में जंगल की ओर दौड़ पड़ा। वह जंगल से न जाने कौन सी जड़ी-बूटी ढूंढ़ लाया। फिर उसे नई सिल पर पीस कर बड़ी रानी को खिला दिया।

राजमहल में खबर पहुंची कि बड़ी रानी ने जहर खा लिया है। राजा पागल की तरह दौड़ कर उसके महल में पहुंचे। मन्त्री भी दौड़ा-दौड़ा उनके साथ आया। राजवैद्य भी मन्त्र पढ़ते हुए आ

पहुंचे। साथ ही साथ महल के दूसरे लोग दास-दासियां, नौकर-चाकर जो जहां थे--भागे-भागे आ पहुंचे।

बन्दर ने कहा--"महाराज, इतने लोगों को क्यों साथ लाए हो? मैंने मां को दवा पिला दी है। मां अब अच्छी हो रही हैं, उन्हें सोने दीजिए। इन सब आदमियों को चले जाने के लिए कह दें।"

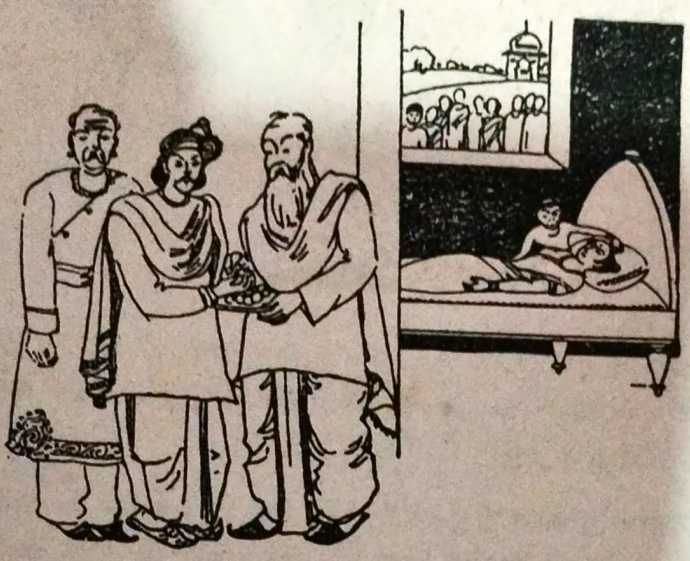

राजा ने जहरीली मिठाई की परीक्षा करवाई और फिर राजवैद्य को विदा कर दिया। राज्य का काम-काज मन्त्री के सुपुर्द कर दिया। राजा खुद बड़ी रानी के महल में ही रह गए।

तीन दिन तीन रात बड़ी रानी बेहोश पड़ी रही। चौथे दिन उसे होश आया और उसने आंखें खोलीं।

बन्दर ने आकर राजा को खबर दी--"महाराज, मां अब अच्छी हो गई हैं। आपके बेटा हुआ है।"

राजा ने बन्दर को अपने गले से हार उतार कर इनाम में दे दिया और कहा--"चलो बन्दर, बड़ी रानी और उसके बेटे को देख आएं।"

बन्दर ने उत्तर दिया--"महाराज, ज्योतिषी को पत्रा दिखाने पर मालूम हुआ कि यदि आप अभी अपने बेटे को देखेंगे, तो आपकी आंखें चली जाएंगी। राजकुमार की शादी हो जाने के बाद ही आप उसे देख सकेंगे। फिलहाल आप जाकर यह देख आइए कि छोटी रानी ने बड़ी रानी की क्या हालत कर दी है।"

राजा ने जाकर देखा कि ज़हर के कारण बड़ी रानी की सोने जैसी देह जल कर काली हो गई है। रानी एक गिरे हुए पत्ते की तरह पलंग पर पड़ी है। अब उसे कोई पहचान भी नहीं सकता।

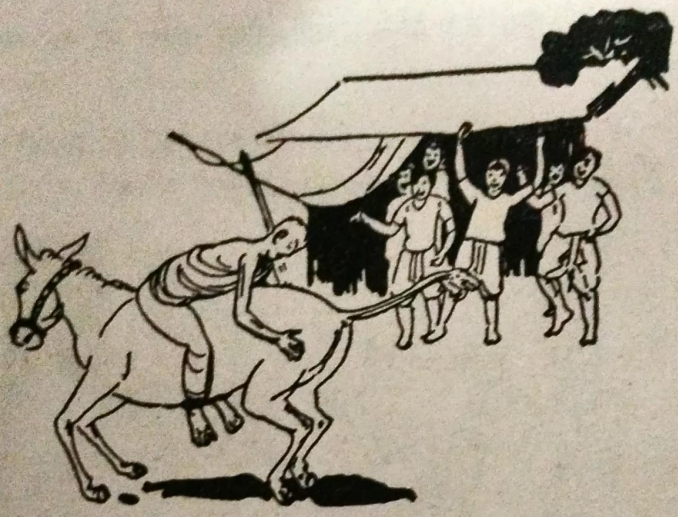

राजा ने महल में आकर छोटी रानी को बन्द करवा दिया और उस पर पहरा बैठा दिया। डायन बुढ़िया को भी सज़ा मिली। राजा ने दही लगवा कर उसके बाल मुंडवा दिए और गधे पर उल्टे बिठा कर देश निकाला दे दिया।

इसके बाद राजा ने आज्ञा दी--"मंत्री, आज बड़ा ही शुभ दिन है। इतने दिनों बाद चक्रवर्ती बेटा मिला है। तुम सड़कों पर दिये जलवाओ, आतिशबाजी छुड़वाओ, घर-घर में दिवाली मने। दीन-दुखियों को बुलाकर राजभंडार लुटा दो। राज्य में कोई भिखारी न रह जाए।"

मन्त्री ने राजा की आज्ञा से तमाम सड़कों पर रोशनी करवाई, आतिशबाजी छुड़वाई और लोगों ने खुशी से अपने-अपने घरों में दिवाली मनाई। दीन-दुखियों के लिए राजभंडार खोल दिया गया। राजा की जय-जयकार हुई।

राज्य में रोज़ नए-नए उत्सव होने लगे। मन्दिरों में भेंट चढ़ाई जाने लगी। इसी प्रकार दस वर्ष बीत गए।

राजा ने बन्दर को बुला कर कहा--"दस वर्ष बीत गए। अब तो बेटे का मुंह दिखलाओ।"

बन्दर बोला--"महाराज, पहले लड़के के लिए दुलहिन ढूंढ लीजिए। उसकी शादी कीजिए, फिर बेटे का मुखड़ा देखिए। यदि अभी आप उसका मुंह देखेंगे तो अपनी आंखों से हाथ धो बैठेंगे।"

बन्दर के कहने के अनुसार राजा ने देश-विदेश में दूत भेजे। कितने ही देशों से राजकन्याओं के लिए संदेश आए, पर राजा को कोई भी कन्या पसन्द नहीं आई। आखिर पटली देश के राजा के भाट ने सोने के डिब्बे में सोने जैसी सुन्दर राजकन्या की तस्वीर निकाल कर राजा को दिखाई। कच्चे सोने जैसा उसका सुन्दर रंग, धनुष-सी भौंहे, हिरनी जैसी बड़ी-बड़ी आंखें, मुस्कराते होंठ, खोले जाने पर एड़ी छू लेने वाले लम्बे-लम्बे बाल। राजा को यह लड़की पसन्द आ गई।

बन्दर को बुलाकर राजा ने कहा--"बेटे के लिए लड़की तो मैंने पसन्द कर ली है। कल शुभ दिन है, शुभ लगन में बारात लेकर चलूंगा।"

बन्दर ने कहा--"महाराज, कल संध्या समय वर को लेने के लिए पालकी और कहारों को भेज दीजिएगा। मैं वर को लेकर विवाह कराने पहुंच जाऊंगा।"

इस पर राजा ने कहा--"देखो जी, मैं पिछले दस सालों से तुम्हारी बात मानता आया हूं। यदि कल भी तुमने मुझे लड़का नहीं दिखाया तो ठीक न होगा।"

बन्दर ने उत्तर दिया--"महाराज, आप बेफिक्र रहें। आप समधी के यहां चले जाइए। हम कल वर के साथ अवश्य पहुंच रहे हैं।"

कहीं राजकुमार को धोखे से न देख लें, और अंधे न हो जाएं, इस डर से राजा फौरन समधी के घर रवाना हो गए।

उधर बन्दर नए महल में बड़ी रानी के पास पहुंचा। बड़ी रानी ने जबसे लड़के की शादी की बात सुनी थी, तभी से वह आंसू बहा रही थी। वह परेशान हो रही थी, कि उसे अब लड़का कहां मिलेगा और अब वह राजा को किस बहाने से टालेगी।

बन्दर बोला--"आ, मां जल्दी से उठ। वर के लिए पोशाक ला और खीर की एक गुड़िया बना दे। उसे सजा कर मैं ब्याह लाऊं।"

रानी ने कहा--"बेटा, क्या तुझे जान प्यारी नहीं है? किस हिम्मत से तू खीर की गुड़िया को वर के समान सजाकर ब्याहने जाएगा? किस बहाने से अब तू राजा को टालेगा? छल से राजा की सुहागिन बनी हूं। इसी पाप के कारण छोटी रानी ने जहर खिलाया। वह तो भाग्य अच्छा था, सो तेरी मेहनत से जान बच गई। अब फिर किस मुंह से राजा के साथ छल करूं? बेटा, अब यह सब छोड़ दे। पाप का बोझ और काहे को बढ़ाता है? तू जा, राजा को बुला ला, मैं सारा भेद खोल दूं।"

बन्दर ने जवाब दिया--"राजा अब कहां मिलेंगे? कन्या के घर का यहां से दो दिन का रास्ता है। राजा वहां के लिए रवाना भी हो गए। तू मेरी बात मान ले और खीर की गुड़िया बना दे। राजा वहां बाट जोहते होंगे। वर के न आने से बड़ी बेइज्जती होगी। मां, तू जरा भी परेशान न हो और खीर की गुड़िया को ब्याहने के लिए भेज दे। अगर षष्ठी माई की दया हो गई तो उनका दास तेरी सूनी गोद को भर देगा।"

रानी ने बन्दर के भरोसे पर हिम्मत बांधी। उसने खीर की गुड़िया बना कर उसे रेशमी कपड़े, सिर पर सोने का मुकुट और पांवों में ज़री की जूतियां पहना दीं।

बन्दर ने चुपचाप खीर की गुड़िया को पालकी में बैठा कर उसके चारों ओर रंगीन पर्दे लगा दिए। जरी की जूतियों में वर के केवल नन्हें-नन्हें पांव ही बाहर दिखाई पड़ते थे।

सोलह कहारों ने वर की पालकी को उठाया। बन्दर भी सिर पर पगड़ी और कमर में चादर बांध कर धूम-धाम के साथ बारात लेकर चला। बारात के साथ झण्डे फहरा रहे थे, बाजे बज रहे थे, और मशालें जल रही थीं। उधर बेचारी बड़ी रानी अंधेरे महल में बैठकर संकट टालने वाले भगवान को याद कर रही थी।

वर की पालकी को ले जाने वाले सोलह कहार, रोशनी करने वाले मशालची, ढोल, नगाड़ा, शहनाई आदि बाजे वाले और सैकड़ों बाराती खुशियां मनाते हुए रात भर चलते रहे।

भोर होते-होते बारात दुलहिन के गांव दिग नगर के तालाब के पास जा पहुंची। उस समय तक मशालें जल कर बुझ गई थीं। घोड़े दौड़ते-दौड़ते बेदम हो गए थे। कहार पालकी ढोते-ढोते थक गए थे और दर्द के मारे बाजे वालों के हाथ टूटे जा रहे थे।

बन्दर ने तालाब के पास बारात के लिए तम्बू लगाने का हुक्म दिया। षष्ठी माई के बरगद के पेड़ के नीचे उसने वर की पालकी उतरवाकर कहारों को आराम करने के लिये छुट्टी दे दी। फिर उसने मन्त्री से कहा--"मन्त्री जी, राजा की आज्ञा है कि कोई भी वर को न देखे। आज के दिन वर को देखना अशुभ है।"

मन्त्री ने इस हुक्म को जारी कर दिया। साथ आए हुए बारातियों ने तालाब में नहाया, रसोई तैयार करके खाना खाया और फिर तम्बुओं में बेखबर होकर सो गए। राजा का हुक्म था, सो बरगद के पेड़ के पास किसी ने झांका तक नहीं। गांव की बहू-बेटियों के न आने से उस दिन षष्ठी माई की पूजा नहीं हुई। भूख के मारे उनका बुरा हाल हो गया। प्यास से उनका मुंह सूखने लगा। उनकी इस हालत पर बन्दर मन ही मन हंसने लगा।

दिन बहुत चढ़ गया। भोग की बात तो दूर रही, षष्ठी माई को एक बूंद पानी भी नसीब न हुआ। बेचारी छटपटाने लगी। उनकी पालतू बिल्ली भी म्याऊं-म्याऊं करने लगी। तब बन्दर न जाने क्या सोचकर, चुपचाप दरवाजा खोलकर, पालकी के अन्दर छिप कर बैठ गया।

षष्ठी माई ने सोचा कि चलो, अब आफत टली। धूप में वह अपने सिंहासन से उतर कर आईं और नैवेद्य में से केला, मूली आदि ढूंढ़ने लगीं। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उन्हें पालकी के भीतर खीर की गुड़िया दिखाई पड़ गई। बस, फिर क्या था, उनके मुंह में पानी आ गया और उन्होंने फौरन नींद की देवियों, अपनी मौसी-बुआ को बुला भेजा।

दिग नगर में जब दिन रहता है, तब नींद के देश में रात रहती है। नींद की देवियां रात भर जागकर दिग नगर के बच्चों को सुलाती रहीं। फिर नींद के देश की राजकन्या को सुलाया। अब कहीं बहुत देर बार उन्हें कमर सीधी करने का मौका मिला था। उनकी आंखें झपकी ही थीं कि षष्ठी माई का बुलावा आ पहुंचा। नींद के देश की राजकन्या को सुलाकर सोने वाली मौसी-बुआ जग उठीं और फिर नींद के देश से दिग नगर जा पहुंची।

उन्होंने षष्ठी माई को प्रणाम कर पूछा--"माई, क्या हुक्म है?"

वह बोलीं--"देवी, इस भरी दोपहरी में मुंह में एक दाना भी नहीं पड़ा। बहन, तुम लोग एक काम करो। इस देश में जो जहां पर हो उसे वहीं वैसे ही सुला दो। इसी बीच में पालकी में रखी हुई खीर की गुड़िया को मैं खा लूंगी।"

षष्ठी माई की आज्ञा पाकर मौसी-बुआ ने माया रच कर दिग नगर के सब लोगों को गहरी नींद में सुला दिया। षष्ठी पेड़ के नीचे सोए हुए बाराती और भी गहरी नींद में सो गए। चरवाहे खेतों में ढोर चराते-चराते सो गए। हुक्के की नली मुंह से लगाए हुए ही राजा की आंखे झपक गईं। बगल में बच्चे को सुलाते-सुलाते उसकी मां भी सो गई। पाठशाला में बेंत हाथ में लिए गुरु जी खर्राटे भरने लगे। भरी दोपहरी को दिग नगर में सिर्फ राजा के हाथी-घोड़े, रास्ते के सियार-कुत्ते, जंगल की चिड़ियां, षष्ठी माई की बिल्लियां और रानी का पाला-पोसा बन्दर जागते रहे।

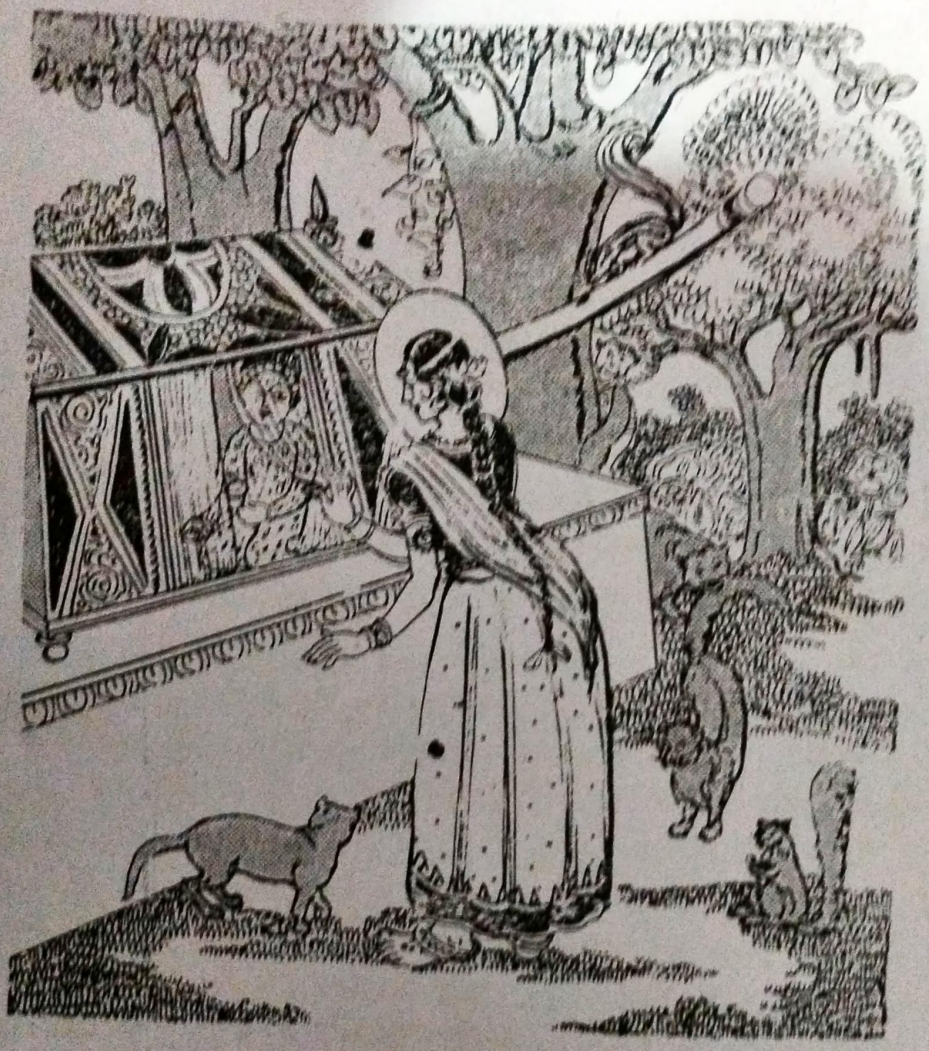

षष्ठी माई ने अब पालकी का पर्दा सरका कर खीर की गुड़िया उठा ली। खीर की बास पाकर पेड़ से उतरकर गिलहरी, जंगल से जंगली बिल्ली, पानी में से ऊदबिलाव और घर के कोने से शर्मीली बिल्ली सब दौड़ कर आ गईं।

षष्ठी माई ने खीर की गुड़िया की दसों उंगलियां अपनी बिल्लियों को खाने को दे दीं। मौसी-बुआ को गुड़िया के कान देकर विदा किया। खुद खीर के बने हाथ-पांव, सिर, छाती और पीठ खा गईं।

मौसी-बुआ के जाते ही दिग नगर के लोगों की नींद टूटी। गांव के घर-घर में सोए हुए लोग जाग उठे। षष्ठी माई जल्दी से अपना मुंह पोंछ कर मंदिर के भीतर घुसने लगीं, पर इसी बीच बन्दर ने उन्हें टोका--"माई, कहां जा रही हो? खीर का लड़का तो लौटा दो। चोरी से खीर की गुड़िया खाते हुए पकड़ी गई हो। मैं सारी दुनिया में इस बात को फैला दूंगा, तुम्हारी बड़ी बदनामी होगी।"

षष्ठी माई मन में तो डरी, पर ऊपर से बोली--"दुष्ट कहीं का! तू मुंहजला यह सब क्या बकता है? जा भाग जा। मुझे जल्दी से जाने दे। कहीं कोई देख न ले।"

बन्दर ने कहा--"नहीं माई, यह सब नहीं चलेगा। तुम मुझे पहले लड़का दे दो। तभी मैं तुम्हें छोड़ूंगा, नहीं तो सिंहासन समेत तुम्हें तालाब में डुबो दूंगा। देवी होकर भी तुमने चोरी की, इसकी सजा तुम्हें जरूर मिलेगी।"

षष्ठी देवी झेंप गई और बोली--"अरे, चुप! चुप!! कहीं कोई सुन लेगा। तेरी खीर की गुड़िया को तो मैंने खा डाला। उसे अब कहां से लाकर दूं? देख उस बड़ के नीचे हमारे बच्चे खेल रहे हैं, जो भी तुझे पसन्द हो, उठा ले और ब्याहने के लिए ले जा। मैं वरदान देती हूं कि बड़ी रानी उसे ही अपना बेटा मानेगी। अब तू मुझे छोड़ और जाने दे। देर हो रही है।"

बन्दर ने कहा--"ठकुराइन, कहां हैं तुम्हारे बच्चे? बरगद के पेड़ के नीचे तो कोई भी दिखाई नहीं देता। हां, यदि तुम मुझे दिव्य नेत्र का वरदान दे दो, तो मैं उन्हें देख सकूंगा।"

यह सुनकर षष्ठी देवी ने बन्दर की आंखों पर हाथ फेर दिया। बन्दर को दिव्य दृष्टि मिल गई।

बन्दर ने देखा कि षष्ठी मण्डप के आसपास केवल लड़के-लड़कियां हैं। जल में, थल में, रास्ते में, हाट में, पेड़ों की डालों पर, घास पर, सब जगह लड़के-लड़कियों का मेला है। कोई काला है, तो कोई गोरा और कोई सांवला। किसी के पांव में नूपुर हैं, तो किसी की कमर में करधनी और किसी के गले में सोने का हार। कोई बांसुरी बजा रहा है, कोई हाथों में झुनझुना लिए है, कोई पांव के नूपुरों को बजा-बजा कर अपने कोमल हाथों को घुमाता हुआ नाच रहा है। किसी के पांव में लाल जूता है और सिर पर लाल टोपी। किसी के शरीर पर लाख रुपये का फूलदार अंगरखा है। कुछ लड़के दुबले-पतले हैं, कुछ मोटे-तगड़े। कोई शरारती हैं, कोई सीधे। कुछ लड़के तालाब के पानी में मछली पकड़ रहें हैं, तो कुछ बांध के पानी में नहा रहे हैं और कुछ काठ के घोड़े पर सवारी कर रहे हैं, कोई पेड़ के नीचे फूल चुन रहे हैं, तो कोई पेड़ों पर चढ़कर मीठे-मीठे फल तोड़ रहा है। चारों ओर खेल-कूद, मारपीट, हँसी और रोना।

'स्वप्न के राज्य' नामक इस नए देश में बन्दर ने देखा कि वहां केवल खेल-कूद है और कहीं कोई पाठशाला नहीं है। न गुरुजी हैं और न उनके हाथ में रहने वाली छड़ी का ही कोई पता है। वहां पानी से भरे हुए तालाब हैं। दूर-दूर तक फैले हुए बड़े-बड़े मैदान हैं। आम-कटहल के बाग हैं। पेड़ों पर हरे-हरे पंखों वाले तोते पूंछ हिला रहे हैं। नदी के पानी में गोल आंख वाली बोआल मछली नाच रही है और चुकन्दर की झाड़ियों में मच्छर अपना राज्य चला रहे हैं। जंगल के किनारे वनगांव में मौसी-बुआ रहती हैं। वे लाई के लड्डू बनाती हैं। घर के पास अनार के पेड़ पर परकू चिड़िया नाचती है। नदी किनारे पेड़ फलों से लदे हैं। मैदान में नीला घोड़ा चरता रहता है और रास्ते में गोड़ देश के सुनहले मोर मिलते हैं। वहां का लड़का उस नील घोड़े पर सवार होकर ढोल-ढाक, मृदंग-झांझर बजाकर, साथ में डोली लिए कमला पूली देश में राजकुमारी को ब्याहने जा रहा है।

बन्दर भी उसके साथ हो लिया। उसने देखा कि वहां पर तोतों का झुण्ड लगा है। कुछ पेड़ों पर बैठकर चहचहा रहे हैं और कुछ उस देश के लड़कों के साथ खेल रहे हैं। वहां लोग खेती कर रहे हैं और हीरों से दांतों को चमकाते हैं। वह एक अजब देश है। वहां अभी सुबह है, तो पल भर में ही सांझ हो जाती है। वहां का ढंग ही निराला है!

भुरभुरी रेत के बीच में झिलमिल पानी चमक रहा है। उसके किनारे मछलियां पकड़ने के लिए पालकी पर चढ़कर छियासी कौड़ियों से खेलते हुए छः लड़कों का एक झुण्ड आता है। किसी लड़के के पांव में मछली के कांटे चुभ गए हैं तो किसी के चांद से मुखड़े पर चिलमिलाती धूप पड़ रही है। मल्लाहों के लड़के जाल ओढ़कर सो रहे हैं। ऐसे समय रिमझिम पानी बरसने लगा। नदी में बाढ़ आ गई। सब लड़के दुलहिन की पालकी छोड़कर जिधर बना, उधर उलटे पांव लौट गए। रास्ते में चील झपटा मारकर उनसे मछलियां छीन कर उड़ गई और मेंढक उनसे बन्सी छीन कर छपाक से पानी में कूद गए। बच्चे रूठकर घर आए तो उनकी माताओं ने उन्हें गरम-गरम दूध ठण्डा करके पिलाया।

अब उस भुरभुरी रेत के बीच चमकते पानी के किनारे शिवजी की नाव लगी। उनके साथ तीन कन्याएं थीं। एक ने खाना बनाया और थाली परोसी। दूसरे ने खाया और तीसरी कुछ न खाकर बिना खाए पीए पीहर चली गई। बन्दर भी उसके साथ-साथ पीहर के देश में चला।

वहां पहुंचकर बन्दर ने देखा कि तालाब में लड़कियां नहा रहीं है और अपने काले-काले केशों को संवार रही हैं। धार के एक किनारे पर रोहु और दूसरे किनारे पर कतला मछलियां तैर कर आ गईं। उनमें से एक को गुरुजी ने लिया और दूसरी को नाव के तोते ने ले लिया। यह देखकर पानी का ऊदबिलाव तोते को एक हाथ में और दूसरे हाथ में मछली को लेकर नाचने लगा। मकान के दरवाज़े पर, मुन्ने की मां ने मुन्ने को नचाते हुए कहा--'अरे! ऊदबिलाव, मुन्ना का नाच तो देखता जा।'

बन्दर ने देखा कि लड़का बड़ा सुन्दर है, मानो सोने का बना चांद हो, इसलिए उसने जल्दी से लड़के को झपट लिया। फौरन ही षष्ठी देवी के स्थान का वह सपने का देश गायब हो गया। लम्बी पूंछवाला तोता आकाश को हरा करके जाने किस देश को उड़ गया और शिवजी की नाव पता नहीं किस देश में बह गई। घाट की लड़कियां धारीदार साड़ी लपेट कर चली गईं। पूंदूरानी को ससुराल ले जाते-जाते कहार आम के नीचे के अन्धेरे में उड़न छू हो गए। इमली के पेड़ पर ऊदबिलाव नाचते-नाचते पत्तों में समा गए। मानों सारा देश ही मिट्टी में समा गया।

बन्दर ने आंख उठाकर देखा तो सब गायब था। वह उस बरगद के झाड़ के नीचे उस लड़के के साथ अकेला खड़ा था। तब उसने लोगों को बुलाकर उस चांद से मुखड़े वाले सुन्दर लड़के को पालकी पर बैठाया। सांझ हो गई थी। उसने मशालें जलवाई और पहले की तरह बारात धूमधाम से फिर दिग नगर छोड़कर आगे बढ़ी।

वहां पाटली देश में समधी के घर पहुंच कर राजा मन ही मन यह सोच कर गुस्सा हो रहे थे कि बन्दर अभी तक नहीं आया। उसने मेरे साथ मज़ाक किया। लौट कर उसकी गर्दन मरोड़ दूंगा।

दुलहिन सोच रही थी कि वर देखने में न जाने कैसा है। कन्या के मां-बाप सोच रहे थे कि हाय! अब हमारी लाडली बेटी परायी हो जाएगी। दास-दासियां सोच रही थीं कि कब काम खतम हो और वे जाकर दूल्हें को देखें।

इसी समय डमडम ढोल बजाते हुए, पीं-पीं शहनाई बजाते हुए, मशालों से रोशनी फैलाकर बन्दर बारात लेकर आ पहुंचा।

राजा ने लड़के का हाथ पकड़कर मण्डप में बैठाया। कन्या के पिता ने कन्या का हाथ वर के हाथ में थमा दिया। पण्डितों ने मन्त्र पढ़े, दास-दासियों ने शंख बजाए। ब्याह हो गया। सभी को लड़का बेहद पसन्द आया।

शादी हो जाने के बाद दूसरे दिन राजा पतोहू को विदा कराके उसी धूमधाम के साथ अपने देश के लिए रवाना हो गए। पाटली देश का राजमहल एक ही रात में सूना हो गया। लाडली बेटी पराए घर चली गई।

बड़ी रानी की--दो दिन और दो रातें रोते-रोते बीतीं। फिर जब उसकी झपकी लगी तो उसने देखा कि षष्ठी ठकुराइन उसे उठाकर कह रही हैं--'रानी उठ, देख तेरा लाल घर आया है।'

रानी की आंख खुल गई। इसी बीच उसने दासियों की आवाज़ सुनी--"रानी जी, उठिए। अच्छे वस्त्र पहनकर बहू-बेटे की अगवानी कीजिए।"

रानी अच्छे कपड़े पहनकर आ गई और उसने देखा कि सचमुच ही राजा बहू-बेटे को ले आए हैं। रानी ने हँसकर बेटे को गोद में उठा लिया।

षष्ठी देवी का वरदान पाकर वह खीर की गुड़िया वाली बात को बिलकुल ही भूल गई। उसे लगा कि वह तो सिर्फ सपना था।

राजा ने फिर लड़के को राजपाट सौंप दिया और बन्दर को मन्त्री बना दिया। पतोहू को उसने मायादेश से लाई हुई आठ हजार रत्नों की आठ चूड़ियों और हजार तोले के दस पायल मुंह दिखाई में दिए। उसके हाथ में रत्नों की चूड़ियां जगमगा उठीं और पायल झनझनाने लगे।

छोटी रानी यह सब देखकर जलन के मारे घुल-घुल कर मर गई।

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार